अहेतु कृपा

शाम के बाद माँ कमरे में आकर बैठ गयीं तब हम लोग उनके पद प्रान्त में आकर बैठे । आज माँ की आरती हुई । अवनी बाबू ने आरती की । सभी लोग आरती गायन करते रहे । आरती समाप्त होने पर अवनी बाबू, स्वामी शंकरानन्द, आनन्द भाई आदि ने आद्यास्तोत्र पाठ किया । इसके बाद माँ को जलपान कराने के लिए ले जाया गया । हम लोग कमरे में बैठे रहे । स्वामी अखण्डानन्दजी से बातचीत करने लगा । सबेरे कृपा और पुरुषकार के बारे में जो बातें हुई थीं, उसकी चर्चा चलने लगी ।

इसी समय ज्ञान ब्रह्मचारी ने कहा–"माँ ने कहा था कि सबेरे जिस कृपा की चर्चा हुई थी, वह समाप्त नहीं हुई है । उस समय अहेतुकी कृपा के बारे में कुछ नहीं कहा गया था । अहेतुकी कृपा भी है । तुम लोग मुझे याद दिला देना, उस बारे में कुछ कहूँगी ।"

माँ कृपा के बारे में क्या कहेंगी, यह सुनने के लिए चुपचाप बैठा रहा ।

श्री श्री माँ का भोग जब समाप्त हो गया तब वे कमरे में आकर बैठ गयीं । खुकुनी दीदी माँ के समीप बैठीं । विमला माँ दूसरे कमरे में सोने चली गयीं । माँ जब अपने आसन पर स्थिर होकर बैठीं तब मैंने माँ से पूछा–तुमने शायद यह कहा था कि अहेतुकी कृपा नामक एक प्रकार की कृपा है ?

माँ–हाँ ।

माँ–वह क्या है ?

माँ–बिना कारणवाली कृपा ।

मैं–इस प्रकार की कृपा रहने पर तो भगवान् को ख्याली कहा जायगा ।

माँ–भगवान् का भी ख्याल है । वे सभी ओर से पूर्ण है । फिर उनमें ख्याल क्यों नहीं रहेगा ?

मैं–अच्छा माँ, तुम जिस अहेतुकी कृपा की चर्चा कर रही हो, वह किसकी ओर से अहेतुकी है ?

माँ–भगवान् की ओर से ।

इतना कहने के बाद माँ ने इस तरह मुँह बनाया जैसे इस बारे में ओर कोई चर्चा नहीं करना चाहती, फलतः चुप हो जाना पड़ा । दूसरी बाते होने लगीं ।

कुछ देर बाद माँ ने धीरे–धीरे कीर्तन करने का आदेश दिया। लेकिन कीर्तन का स्वर क्रमशः धीरे–धीरे से तीव्र स्वर तक पहुँचने लगा। यह देखकर माँ ने बन्द कर देने को कहा ।

माँ ने कहा–'इतने जोर से कीर्तन करने पर माताजी (अर्थात् विमला माँ) को कष्ट होगा और वह इस कमरे में चली आयेंगी ।'

हमलोग जिस कमरे में बातचीत कर रहे थे, उसी के बगल में विमला माँ सो रही थीं । हमारे कमरे के पूर्ववाली दीवार में एक बड़ा छेद था । वह इतना बड़ा था कि अगर हम इस कमरे में बैठकर कोई भी बात करते हैं तो बगल के कमरे में स्पष्ट सुनाई देती है । कीर्तन बन्द होने के कुछ देर बाद विमला माँ हमारे कमरे में आयीं । उनकी आकृति पर वेदना के भाव थे । कीर्तन–ध्वनि ने उन्हें बेचैन कर दिया है । उन्होंने यही बताया। आगे उन्होंने कहा कि कीर्तन सुनकर वे इस कमरे में दौड़कर आना चाह रही थीं, पर पता नहीं किसने उनके कमरे के दरवाजे में बाहर से सांकल चढ़ा दिया था । यहाँ उस समय आ न सकने के कारण वेदना से तड़प रही हैं ।

माँ हँसकर बोलीं–''इन लोगों को जोर से कीर्तन करते देख मैंने सोचा कि कोई माताजी के कमरे को बन्द कर दे तो अच्छा हो, वरना माताजी इस कमरे में चली आयेंगी ।''

माँ की इच्छा से कार्य सम्पन्न हो जाता है, इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त हो गया । विमला माँ और आनन्द भाई के साथ कुछ देर बातचीत करने के बाद माँ ने इन लोगों को सोने के लिए चले जाने की आज्ञा दी। हम लोग माँ के पास बैठे रहे ।

साधना की प्रधान बात धैर्य की शिक्षा

श्री श्री माँ विमला माँ के भाव का वर्णन करने लगीं–'कीर्तन सुनने पर शरीर विकल उठे, असह्य यन्त्रणा बोध हो, इसे राजयोग मिश्रित हठ योग कहते हैं । नाम कीर्तन या श्रवण से ऐसा होता है। माताजी नवद्वीप से जल्द–से–जल्द चली जाने के लिए व्याकुल हो उठी हैं । यह व्याकुलता भी साधना की स्थिति से है । इसीलिए माताजी जितनी बार व्याकुल होकर आद्यापीठ चली जाना चाहती हैं, उतनी बार मैं बाधा दे रही हूँ । इस प्रकार की बाधा देना आवश्यक है। कारण इससे धैर्य की परीक्षा होती है । मन व्याकुल होकर जिधर जाना चाहता है, उधर जाने देने पर धैर्य की शिक्षा नहीं होती । साधना करते समय धैर्य को पकड़े रहना ही सबसे बड़ी बात है, माताजी को इसी धैर्य की शिक्षा देने के लिए बाधा दे रही हूँ । इसीलिए आज तीसरे पहर नाव पर घूमाने के लिए ले गयी थी । अगर उसे इस तरह घुमाने न ले जाती और सोने देती तो उसकी क्षति होती ।'

आमतौर पर माँ किसी की इच्छा के विरुद्ध कोई बात नहीं करतीं। केवल निर्मला माँ और विमला माँ के सम्बन्ध में व्यतिक्रम होते देखा। अब समझ पाया कि इस व्यतिक्रम के कारण क्या हैं ।

माँ ने आगे कहा–''भाव का आवेग आने पर शरीर में जितनी यन्त्रणाएँ होती हैं, उन सभी को धैर्य के साथ सहन करना ही वास्तव में तपस्या है । चुपचाप कुछ देर तक भाव का वेग सहन करने पर शरीर श्रान्त, क्लान्त और बेबस हो जाता है । इसे तुम लोग समाधि

समझते हो । लेकिन वास्तव में यह समाधि नहीं है । यह एक प्रकार की शारीरिक क्लान्ति है। समाधि तथा दैहिक क्लान्ति की पृथकता को कार्य एवं भाव द्वारा विचार करना चाहिए । अचानक उसे देखकर समझा नहीं जा सकता ।"

श्री श्री माँ की विद्या–शिक्षा और बाल्य–लीलाएँ

"जो लोग पुस्तकें पढ़ते हैं, वे जरूर कुछ पकड़ लेंगे । लेकिन आदमी को देखकर या पुस्तकें पढ़कर मेरी शिक्षा नहीं हुई है । मेरा जन्म जहाँ हुआ है, वहाँ पढ़ाई–लिखाई की कोई चर्चा नहीं होती थी। चारों ओर मुसलमानों के घर । वे लोग पढ़ते–लिखते नहीं थे । इसके अलावा उनके साथ मेरा मेलजोल नहीं था । सभी मुझे प्यार करते और आदर देते थे, पर तुम लोगों की दीदी माँ की मनाही थी, इसलिए स्नान के पूर्व और किसी समय मुसलमानों के घर नहीं जा पाती थी ।"

"तुम लोगों के दादा महाशय ने (नानाजी) बचपन में मुझे बाल्य शिक्षा के नाम पर क–ख और सामान्य संयुक्त अक्षर के ज्ञान की शिक्षा दी थी । एक दिन में क–ख और एक दिन उल्टा क–ख पढ़ती रही। इसके बाद तुम लोगों के दादा महाशय के दूर के रिश्ते से लगनेवाले एक मामा ने मुझे अपने स्कूल के प्राइमरी क्लास में भर्ती कर लिया। उनका एक निजी स्कूल था जहाँ प्राइमरी तक पढ़ाई होती थी । प्रथम पाठ समाप्त करने के पहले ही मुझे निम्न प्राइमरी स्कूल में भर्ती कर दिया गया । इसका कारण यह था कि मैं निम्न प्राइमरी क्लास में पढ़ता हूँ, सुनने पर विवाह के बाजार में मेरी मर्यादा बढ़ जायगी। इसके अलावा मेरे दादा महाशय के स्कूल में छात्राओं की कमी थी। निम्न प्राइमरी क्लास में छात्राओं की संख्या बढ़ाने के लिए शायद दादा महाशय ने इतने आग्रह के साथ मुझे अपने स्कूल में रखा था । उन्होंने विभिन्न स्थानों से निम्न प्राइमरी क्लास के लिए पुस्तकें संग्रह करवाया।

मेरे पास स्लेट नहीं थी । एक छोटे स्लेट पर मैं लिखा करती थी। इस प्रकार मेरी पढ़ाई प्रारम्भ हुई । स्कूल में भर्ती तो जरूर हो गयी, पर रोज स्कूल नहीं जा पाती थी । हमारे मकान से स्कूल काफी दूर था । तुम लोगों की दीदी माँ मुझे अकेली स्कूल जाने नहीं देती थी। जिस दिन किसी के साथ भेज पाती, उसी दिन स्कूल जाती थी । शेष दिन घर पर रह जाती थी । अपने मामा के यहाँ जब कभी चली जाती तब स्कूल जाना बिलकुल बन्द रहता ।''

कहने का मतलब केवल कुछ दिनों तक स्कूल में मेरी पढ़ाई हुई थी। एक दिन जाकर लड़कियों के साथ जो पाठ पढ़ती, कुछ दिनों बाद जाने पर देखती कि पढ़ाई का पाठ काफी आगे बढ़ गया है । उनके बराबर आने के लिए मुझे बीच के अनेक पृष्ठों को पढ़ लेना पड़ेगा, पर मैं पढ़ नहीं पाती थी । मैं पुस्तकों के पृष्ठ पलटकर उनके बराबर आ जाती । लेकिन आश्चर्य की बात यह हुई कि पढ़ाई–लिखाई में फिसड्डी रहने पर भी मैं क्लास में हमेशा प्रथम आती । मास्टर साहब पाठ पूछकर मुझे लाजवाब नहीं कर पाते थे । इसका कारण था कि घर पर जब मैं पुस्तक लेकर पढ़ने बैठती तब दो–एक शब्द अचानक मेरी आँखों से टकरा जाते और उनके अर्थ अपने आप मन में आ जाते थे । जैसे पुस्तक लेकर पढ़ते–पढ़ते ''हस्ती'' शब्द पर नजर पड़ी । उस शब्द के बारे में कुछ देर सोचने के बाद मन में अर्थ आता–हाथी । इसी तरह दो–एक शब्द लक्ष्य करती और उसका अर्थ सोच लेती । पाठ के भीतर और भी कितने अनजाने शब्द रह गये, उस ओर ध्यान नहीं जाता । जब स्कूल में पढ़ने जाती तब मास्टर साहब उन्हीं शब्दों के अर्थ पूछते जिन शब्दों पर मेरी नजर पड़ चुकी थी । फलतः मुझे उत्तर देने में कष्ट नहीं होता । मैं फटाफट बता देती । यह सब देखकर सहयोगी छात्राएँ अवाक् रह जाती । कारण जब वे किसी शब्द का अर्थ पूछतीं तब मैं नहीं बता पाती थी । जब वे पुस्तक पढ़ने को कहतीं तब मैं पढ़ भी नहीं पाती थी।

"एक बार हमारे स्कूल का मुआइना करने के लिए एक इंस्पेक्टर साहब आये । उस दिन अपनी पुस्तक का एक पाठ बार-बार पढ़कर याद कर चुकी थी । इन्स्पेक्टर ने आकर पूछा कि क्या-क्या हम सब पढ़ते हैं । उन्होंने पुस्तक का एक पाठ खोलकर मुझे पढ़ने के लिए दिया । मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इसी पाठ को आज मैं बार-बार याद कर रही थी । मैं सरसर पढ़ती चली गयी । मुझे इस तरह कहते देख इन्स्पेक्टर ने सोचा की शायद मुझे सब याद है, इसलिए उन्होनें मुझसे और कोई सवाल नहीं किया । इसी प्रकार मेरी पढ़ाई समाप्त हुई ।"

"पढ़ाई-लिखाई के मामले में पोथीवाली विद्या मुझमें नहीं थी, ठीक उसी प्रकार धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में देखकर कुछ सीखा नहीं । घर में पूजा घर था । तुम लोगों की दीदी माँ के आदेश पर ठाकुर घर के काम-काज करती । तुम लोगों की दीदी माँ मुझे "आटेला" "बेदिशा" आदि गालियाँ दिया करती थीं । एक दिन इन्होंने मुझे पत्थर की एक कटोरी धोकर लाने को कहा । साथ ही यह भी कहा-"अगर हो सके तो कटोरी को तोड़कर लाना ।" मैं कटोरी लेकर पोखर के पास गयी । वहाँ वृक्षों के साथ बातें करते-करते कब मेरे हाथ से कटोरी गिरकर टूट गयी, पता नहीं चला । मैं कटोरी के टूटे टुकरों को लेकर घर वापस आयी । तुम लोगों की दीदी माँ ने पूछा-'यह क्या लायी है ।' मैंने कहा-'तुमने तो टूटी कटोरी लाने को कहा था इसीलिए इन टुकड़ों को उठा लायी ।'

"मेरी बात सुनकर नाराज क्या होतीं, उल्टे किसी सूरत से अपनी हँसी रोककर रह गयीं ।"

"एक बार तुम लोगों की दीदी माँ दीक्षा लेने के लिए सोनारगाँव जाने को तैयार हुई । वहीं उनके गुरु का घर था । तुम लोगों के दादा महाशय भी साथ जायेंगे । तुम लोगों की दीदी माँ इस "आटेला"

लड़की को साथ नहीं ले चलेंगी, यह भी कहा । मैं घर पर रह गयी। नाव पर सवार होने के पूर्व तुम लोगों के दादा महाशय एक बार घर आये । मुझे चुपचाप बैठी देखकर मुझसे बोले–'तू हमारे साथ चलेगी ?' इतना कहने के बाद वे मुझे लेकर नाव पर सवार हुए । मार्ग में नाव रोककर रसोई का प्रबन्ध किया गया । भोजन बनाने के बाद एक पक्षी विष्ठा त्यागकर सारा खाना नष्ट कर गया । बाद में सुना कि इस स्थान पर इसी प्रकार अनेक लोगों के भोजन नष्ट हुए हैं । उस स्थान पर जाकर मैंने ऊपर की ओर देखा ।''

खुकुनी दीदी–ऊपर की ओर क्या देखा ?

माँ ने कोई उत्तर नहीं दिया । बिलकुल गुमसुम रहीं । हम लोग हँसने लगे । माँ अलौकिक बातें जल्द नहीं कहना चाहती । दीदीमाँ, दादा महाशय की कहानी यहीं समाप्त हो गयी ।

श्री श्री माँ और स्वामी पूर्णानन्द

इसके बाद माँ हृषिकेश के पूर्णानन्द स्वामी के बारे में कहानी सुनाने लगीं । माँ ने कहा–मैं जिन दिनों हृषिकेश में थी, उन दिनों पूर्णानन्द ने अपने एक शिष्य को भेजकर एक प्रश्न पूछा । मैं उनके प्रश्न का उत्तर दे सकती हूँ या नहीं, इसकी परीक्षा करना उनका उद्देश्य था ।

''शिष्य ने आकर कहा–मेरे गुरुदेव ने आपसे पूछा है कि स्वप्न में क्या–क्या देखा जाता है ?''

मैंने बताया–'स्वप्न का अर्थ तो निद्रा है । वह अज्ञानता है । अज्ञान अवस्था में बहुत कुछ देखा जाता है । सब बताकर समाप्त नहीं किया जा सकता । दूसरी ओर ज्ञानी के निकट सब स्वप्न है।''

''शायद मेरे उत्तर से बाबाजी प्रसन्न हो गये थे । इसके बाद वे मुझसे मिलने आये थे । मैं भी एक दिन उनसे मिलने गयी थी। बाबाजी में बड़े गुण हैं । वे विभिन्न प्रकार के भोजन बनाना जानते

हैं । मुझसे कहते रहे–'अगर मैं सात दिनों तक नित्य बहुपद (विभिन्न प्रकार की) भोजन बनाकर तुम्हें खिलाऊँ तब भी मैं जितने प्रकार के भोजन बनाना जानता हूँ, वे सब समाप्त नहीं होंगे ।''

''मुझे अनेक प्रकार के भोजन बनाकर उन्होंने खिलाया था । मैंने भी उन्हें रसगुल्ला और सन्तरे का पायस बनवाकर भिजवा दिया था । मेरा खाद्य पदार्थ देखकर उन्होंने जानना चाहा था कि कैसे मैंने उसे बनाया है ?''

श्री श्री माँ शायद स्वामी पूर्णानन्द को यह बता देना चाहती रहीं कि विभिन्न प्रकार के भोजन बनाना जानने पर भी अभी सभी प्रकार का नहीं जानते । सम्भवतः इसकी शिक्षा की उन्हें जरूरत थी । अन्यथा शिष्टाचार दिखाने की गरज से माँ यह सब खाना बनवाकर न भेजतीं । इसके बाद उन्होंने दूसरी बार नहीं भेजा ।

अशरीरी जीवों का आगमन

आज रात को बातचीत के सिलसिले में माँ कहने लगीं–''तुम लोग यह मत समझना कि इस कमरे में केवल तुम लोग ही हो । जिस प्रकार तुम लोग मेरी बात सुनने आते हो, उसी प्रकार वे लोग भी आते हैं ।''

एक भक्त–माँ, नवद्वीप में क्या आपकी मुलाकात श्री गौरांग महाप्रभु से नहीं हुई है ?

माँ ने इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर नहीं दिया । लेकिन कहा–''किसी स्थान में जाने पर उस स्थान के विशेष भाव से मुलाकात होती है ।''

इस तरह की बातों में रात के ३.३० बज गये । हमलोग सोने चले गये ।

३१ दिसम्बर, १९३६ ई. गुरुवार । आज विमला माँ कलकत्ता जाने वाली हैं । माँ ने कहा है कि अगर आज वे जाना चाहेंगी तो वे बाधा नहीं देंगी । लेकिन विमला के जाने के बारे में कुछ नहीं बोली ।

श्री श्री माँ की बातें कभी झूठी होती हैं या नहीं

आज सबेरे माँ के निकट बैठकर मैंने माँ से पूछा–"माँ, तुमने एक दिन मुझे कहा था कि तुम्हारे मुँह से निकली बातें झूठी नहीं होतीं । यहाँ तक कि अगर मजाक में भी कुछ कहती हो तो वह भी झूठी नहीं होती । पर खुकुनी दीदी कह रही थीं कि कभी–कभी तुम्हारी बातें गलत साबित होती हैं । नन्दू बाबू डिबरूगढ़ में नौकरी के सिलसिले में जब गये तब तुमने खुकुनी दीदी से कहा था कि नन्दू बाबू वहाँ श्रीशचन्द्र चक्रवर्ती से मुलाकात करें । नन्दू बाबू ने वहाँ जाकर उनकी खोज की तो पता चला कि श्रीश बाबू का स्वर्गवास हो गया है ।"

माँ–मैंने खुकुनी से कहा था कि श्रीश अगर वहाँ रहे तब नन्दू उससे मिल लें । ऐसी बात मैंने नहीं कि वह जरूर श्रीश के साथ मिल ले । इस प्रकार की बातें तभी कहती हूँ जबकि उसके पूर्व "यदि" इत्यादि शब्द रहता है ।

खुकुनी दीदी इस वक्त मौजूद थीं । माँ की बातों का प्रतिवाद उन्होंने नहीं किया । रात के समय मेरे इसी प्रश्न की पुनः चर्चा करते हुए माँ ने विस्तार से व्याख्या की ।

माँ ने कहा–जागतिक भाव में बातें कहने पर उसमें सच–झूठ दोनों रहेगा । कारण जागतिक भाव में सच–झूठ दोनों ही हैं । जब मैं जागतिक भाव में बातें करती हूँ, हँसी–मजाक करती हूँ तब तुम लोग मेरी बातों को उसी रूप में ले लेना । जैसे मैंने कहा कि उस झंझर से एक गिलास पानी ले आओ । तुम लोगों ने जाकर देखा कि उसमें पानी नहीं हैं । उस वक्त तुम लोग यही सोचोगे कि माँ की बात गलत निकली । कारण उक्त झंझर में पानी है जानकर ही माँ ने पानी लाने को कहा । लेकिन जागतिक दृष्टि से देखने पर यह गलत नहीं हैं । तुम लोग भी जब इस प्रकार की बातें कहते हो,

उसे झूठ नहीं कहा जा सकता, बल्कि इससे यह प्रमाणित होता है कि तुम लोगों ने यह अनुमान किया था कि उसमें पानी है, पर अनुमान गलत निकला। तुम लोगों के साथ बातें करते समय मुझे भी इसी प्रकार की बातें करनी पड़ती हैं ।

अगर तुम लोग यह सोचो कि मैं सब जानती हूँ तो तुम लोगों के साथ मेरी बातचीत बिलकुल नहीं चल सकती । कारण जब मैं सब जानती हूँ तब क्या पूछुँगी ? तुम लोगों ने स्नान किया है या नहीं, भोजन किया है या नहीं, यह सब तब नहीं आता । कारण यह सब तो मुझे ज्ञात ही है ।

"इसके अलावा भी एक ऐसी अवस्था है जहाँ सच–झूठ नहीं है । लेकिन इस स्थिति में रहते हुए जागतिक भाव में व्यवहार नहीं किया जा सकता । कारण इससे जगत् में विशृंखलता आ जायेगी । सच–झूठ को पृथक्करण करके ही तो जगत् में सब कुछ किया गया है । परमभाव, सत्य–मिथ्या शून्यभाव जगत् में चलाने पर सब गण्डगोल हो जायगा । इन दोनों स्थिति के बीच एक और स्थिति है । उस स्थिति में जिसे जो कहा जाता है, वह सत्य होता है । इस स्थिति में मैं कुछ भी क्यों न कहूँ, वह सत्य होने के लिए बाध्य है ।"

मैं–माँ, अगर तुम्हारी बातों को कोई मिथ्या न समझकर सारी बातें सत्य समझ ले तो ?

माँ–यदि किसी में विश्वास का इतना जोर हो तो उसके निकट मेरी सारी बातें सत्य हो सकती हैं ।

श्री श्री माँ के बचपन और विवाहित जीवन की बातें

श्री श्री माँ के मुँह से निकली बातें झूठ हो सकती है या नहीं, इस प्रश्न को पूछते समय मैंने श्रीश बाबू की चर्चा की थी । माँ श्रीश बाबू के बारे में तरह–तरह की बातें कहने लगीं । यह सब श्री श्री माँ के बचपन की बातें हैं ।

श्रीयुक्त श्रीशचन्द्र चक्रवर्ती दीदी माँ से सम्बन्धित व्यक्ति नहीं थे। पर उनका हृदय अत्यन्त कोमल था और बडे अच्छे व्यक्ति थे । श्री श्री माँ का जन्म होने के पहले दीदी माँ के कई पुत्र हुए थे जिनका देहान्त हो गया था । दीदी माँ को पुत्र–शोक कातर देखकर श्रीश बाबू ने सोचा कि वे अब दीदी माँ से इस प्रकार का व्यवहार करेंगे ताकि वे उन्हें अपने पुत्र की तरह समझते हुए पुत्रशोक को भुला सकें।

माँ ने कहा–''वास्तव में श्रीश मेरे साथ भाई की तरह व्यवहार करने लगा । वह मुझे प्यार करता था । मुझे ''निम''–''निम'' कहकर मजाक करता । निर्मला न कहकर वह मुझे 'निम' कहता । जब मुझसे मजाक करता तब मैं उसे मुँह चिढ़ाती थी । इस पर वह कहता– 'वाह, वाह, फिर दिखाओ, फिर दिखाओ ।' अपने साथ खिलाने के लिए वह बहुत अनुरोध करता । लेकिन मैं उसके साथ कभी खाना खाने नहीं बैठी । कारण तुमलोगों की दीदी माँ ने ऐसा करने को मना कर रखा था। मैं बड़ी हो गयी हूँ, इसीलिए वे मुझे किसी के साथ खाने के लिए मना कर रखा था। इन घटनाओं के बहुत दिनों बाद विद्याकूट में मुलाकात हुई। उस समय उसे बुलाकर उसके साथ बैठकर मैंने भोजन किया था।''

माँ ने यह भी बताया कि श्रीश बाबू की मृत्यु का संवाद उन्हें ज्ञात था और इसे इशारे से खुकुनी दीदी को उन्होंने बताया भी था, पर दीदी उसे समझ नहीं पायी थीं।

बचपन की कहानी के सिलसिले में उपेन बाबू के साले को कैसे परेशान किया था, इस बारे में माँ ने बताया। उपेन बाबू श्री श्री माँ के जेठ के पुत्र हैं। उपेन बाबू का साला अपनी बहन के द्वितीय विवाह के उपलक्ष्य में उपेन बाबू के यहाँ आया था। श्री श्री माँ ने मजाक करने के उद्देश्य से कहा कि यहाँ की स्थानीय प्रथा के अनुसार एक मंगलघट सिर पर रखकर उसे तालाब तक जाना पड़ेगा। वहाँ जाकर स्त्री–आचार सम्पन्न करना होगा। श्री श्री माँ के निर्देशानुसार एक मिट्टी

के कलश में गोबर–पानी घोलकर आँगन में रखा गया और उसके पास एक छोटा लोढ़ा रख दिया गया। उपेन बाबू के साले से कहा गया कि इसी कलश को लेकर आपको तालाब तक जाना है और आपके पीछे महिलाएँ लोढ़ा लेकर चलेंगी। उपेन बाबू के साले के मन में संदेह हुआ था, ऐसा ठीक से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि सिर पर कलश रखने के पूर्व उसकी जाँच करते रहे। लेकिन कलश को आम और केले के पत्ते से इस कदर ढँक दिया गया था कि भीतर की सामग्री दिखाई नहीं दे रही थी। उन्होंने निश्चित मन से कलश को सिर पर रखा और श्री श्री माँ ने लोढ़ा उठा लिया। दो–चार कदम आगे बढ़ते ही श्री श्री माँ ने लोढ़ा दे मारा और इसके साथ ही कलश टूटकर बिखर गया। उस समय जो स्थिति हुई थी, अनुमान लगाया जा सकता है।

इस कहानी को सुनाने के बाद माँ ने कहा – ''जब जिसे छकाना चाहा, चाहे वह कितना बड़ा चालाक क्यों न हो, उसे छकाया है। एक बार एक उत्सव पर एक लड़का मुझ पर पानी की छींटे डालकर परेशान करता रहा। मैं उसके ऊपर पानी डालने के लिए एक लोटा पानी लेकर छत पर गयी। उसे मेरी नियत का पता चल गया और तेजी से भागा, पर वह ऐसी जगह जाकर रुक गया जहाँ से आगे भागने का मार्ग नहीं था। मैंने ऊपर से पानी उड़ेल कर उसे भीगो दिया।''

दीदी माँ श्री श्री माँ को बेवकूफ लड़की समझती रहीं, पर माँ की बातचीत या आचरण बेवकूफ लड़कियों की तरह नहीं थे। हँसी–मजाक करने में पटु थीं। श्री श्री माँ के एक आत्मीय थे। जो काफी हृष्ट–पुष्ट अवश्य थे, पर उनकी आवाज महीन थी। एक दिन श्री श्री माँ के घर आकर न जाने क्या कह रहे थे। उसकी आवाज सुनकर माँ अपने कमरे में से बाहर आकर बोलीं – ''देखो तो कौन मोटे गले से महीन आवाज निकाल रहा है।''

इस बात को सुनकर सभी लोग हँस पड़े।

श्री श्री माँ के साथ निर्दोष आमोद–आह्लाद करने में जिस प्रकार अनिर्वचनीय आनन्द मिलता है और खराब ढंग से उनके साथ मजाक करने का परिणाम बुरा होता है। एक बार विवाह के सिलसिले में अपने एक रिश्तेदार के घर गयीं। उन दिनों माँ जवानी की ड्योढ़ी पर पैर रख चुकी थीं। माँ को देखते ही लगता असामान्य रूप लावण्यमयी देवी प्रतिमा हैं। इस विवाह में दो युवक भी आये थे।

माँ ने कहा – मैं सजधज कर विवाह वाले घर में गयी। मेरे शरीर पर काले रंग की शाल थी। मुझे देखकर दोनों युवकों ने कहा – 'तुम ऐसी दिखाई दे रही हो, वैसी दिखाई दे रही हो।' बार–बार इन शब्दों को सुनने के बाद मेरी दृष्टि उन पर पड़ी। यह दृष्टि भी कुछ अस्वाभाविक थी। उन दिनों मैं घर की बहू थी, इसलिए पर पुरुष की ओर नहीं देखती थी। जब नयी बहू को शहद चटाया गया तब दूसरा युवक हाथ में कुछ चीनी लेकर मेरे पास आकर बोला – ''तुम भी तो नयी बहू हो। आओ, तुम्हारे मुँह में चीनी डाल दूँ।'' मैं जितना पीछे हटती जाती, वह उतना ही आगे बढ़कर अपना हाथ मेरे मुँह के पास ले आता था। उसे इस तरह करते देख अचानक मेरी दृष्टि उस पर पड़ी। यह दृष्टि कुछ अस्वाभाविक थी। लेकिन इन दोनोंबार ही मैने अपनी इच्छा से उनकी ओर नहीं देखा था। बहरहाल दो बार मुझे इस तरह देखते देख वह निवृत्त हो गया। उत्सव के बाद दोनों अपने घर चले गये। दो दिन बाद पता चला कि जिस युवक ने मेरे साथ अभद्रोचित मजाक किया था, उसे अकारण मार खानी पड़ी और जो युवक मेरे मुँह में चीनी डालने आया था, वह हैजे के कारण मर गया। इसकी मृत्यु शायद इसीलिए निर्दिष्ट थी।''

अब माँ अपने विवाहित जीवन के बारे में कहने लगीं। यह पहले ही बताया गया है कि विवाह के बाजार में मर्यादा बढ़ाने के लिए माँ को निम्न प्राइमरी क्लास में भर्ती किया गया था। माँ निम्न प्राइमरी क्लास में पढ़ती है, यह बात सभी को बता दिया गया था। माँ जब

दीदी माँ के साथ गुरु गृह में गयी थीं तब माँ की शिक्षा के बारे में बताया गया कि माँ निम्न प्राइमरी में पढ़ती हैं।

यह सुनकर एक सज्जन ने "निम्न प्राइमरी" का अर्थ पूछा। माँ ने सरल भाव से जवाब दिया – "इसका अर्थ मुझे किसी ने नहीं बताया है।"

बहरहाल पत्नी निम्न प्राइमरी में पढ़ चुकी है, सुनकर भोलानाथ ने विवाह के दूसरे दिन पत्नी की हस्तलिपि देखना चाहा। उद्देश्य यह था कि पत्नी पत्र वगैरह लिख सकती हैं या नहीं। इधर माँ किसी भी प्रकार से हस्तलिपि दिखाने को राजी नहीं हुई। दीदी माँ डरा–धमकाकर माँ से उनका हस्ताक्षर तक नहीं करा सकीं। अन्त में सभी लोग मिलकर जबरदस्ती करके माँ से उनसे हस्ताक्षर करवाकर भोलानाथ को दिखाया।

माँ ने कहा – "विवाह के बाद भोलानाथ ने मुझे एक लम्बा पत्र लिखा। हमारे यहाँ पत्र आना, एक नयी घटना थी। पत्र आने के साथ ही गाँव भर में शोर हो गया कि मेरे नाम एक पत्र आया है। पत्र तुम लोगों की दीदी माँ को प्राप्त हुआ। तुम लोगों की दीदी माँ अपने हाथ से मुझे पत्र देने में शायद लज्जा अनुभव करने लगी। फलतः उन्होंने पत्र को ऐसे स्थान पर रख दिया ताकि सहज ही उस पर मेरी दृष्टि पड़ जाय। इधर मैंने उस पत्र को देखकर भी अनदेखा कर दिया। इससे तुम लोगों की दीदी माँ की परेशानी बढ़ गयी। अन्त में एक दूसरे व्यक्ति के हाथ मुझे पत्र भिजवाया गया। भेजने को तो पत्र तुम लोगों की दीदी माँ ने भेज दिया, पर वे चिन्तित रहने लगीं। उक्त पत्र का उत्तर देने के लिए बार–बार तगादा करने लगीं। यह सब बातें कहने पर लड़कियाँ शर्म से गम्भीर हो उठती हैं। मैं भी शर्म दिखाने की गरज से गम्भीर हो गयी। अन्त में अनेक लोगों ने मिलकर एक मसौदा बनाया और एक उत्तर बनाया गया। मैंने उसकी नकल करके भेज दी।

"तुम लोगों के दादा महाशय जब मुझे श्रीपुर में रख आये तब भोलानाथ अगर पत्र लिखें तो मुझे कैसा उत्तर देना चाहिए, इस तरह के कई नमूने वाले पत्र वे लिखकर मेरे पास छोड़ गये।"

"मैं निम्न प्राइमरी तक पढ़ चुकी हूँ सुनकर भोलानाथ ने एक पुस्तक खरीद कर मुझे दी। एक दिन रात के वक्त भोलानाथ ने कहा – 'तुम उस पुस्तक को पढ़ो। मैं लेटकर सुनता रहूँगा।' अपनी पढ़ाई के बारे में तुम लोगों को बता चुकी हूँ। प्रत्येक शब्द का हिज्जे करके उच्चारण करती रही। इसके अलावा मुझे यह भी बताया गया था कि जब कोई वाक्य पढ़ा जाय तब जब तक खड़ी पाई न आये तब तक श्वास नहीं फेंकना चाहिए। एक तो हिज्जे करके पढ़ना, दूसरे खड़ी पाई (विराम) आने तक एक श्वास में पढ़ना, मेरे लिए प्राणान्त समस्या बन गयी। भोलानाथ एक ओर लेटे हुए मेरी पढ़ाई का नमूना सुन रहे थे। कुछ देर सुनने के बाद करवट बदलते हुए बोले – 'हूँ, यही है निम्न प्राइमरी की पढ़ाई? यह तो पहली पोथी भी नहीं है।' इतना कहकर उन्होंने आगे पढ़ने से रोक दिया। इसके बाद फिर मुझे कभी पढ़ने के लिए नहीं कहा गया।"

इस कहानी को माँ ने जिस ढंग से सुनाया, उसे सुनकर सभी लोग हँसने लगे। जो लिखा गया, उसमें श्री श्री माँ की बातों का माधुर्य नहीं आया। माँ लेटी हुई ये बातें कहती रहीं। भोलानाथ ने किस प्रकार करवट बदलते हुए मुँह बनाकर इन बातों को कहा था, उसका अनुकरण करती हुई माँ दिखा रही थीं।

खुकुनी दीदी ने पूछा – "तुम्हें यह सब बातें याद कैसे हैं?"

माँ ने कहा – "इस वक्त मैं तद्भाव में भावित हूँ, इसलिए सब याद आ रही है।"

माँ हमारी आनन्दमयी हैं, इस बात का अनुभव इस बार नवद्वीप आने पर पूर्ण रूप से अनुभव करने लगा। माँ के सामने इस बार जितना हँस सका, उतना जीवन में कभी हँस नहीं पाया था।

विग्रह दर्शन के लिए मंदिरों में जाना

लगभग ९–१० बजे सुना कि माँ हम लोगों को लेकर प्रत्येक मन्दिर में घूमने जायेंगी। हम लोग माँ को छोड़कर कहीं नहीं जा रहे हैं देखकर माँ ने हम लोगों को देवालयों में ले जाने का निश्चय किया है। सबसे पहले हम लोग भवतारण तथा भवतारिणी के मन्दिर में गये। भवतारिणी की मूर्ति, काली मूर्ति है, पर वे आसन पर बैठी हैं। मूर्ति काफी बड़ी है। इस तरह की मूर्ति मैंने कभी नहीं देखी है। यहाँ से हम जगाई–मधाई के मन्दिर में गये। यहाँ आते ही श्री अवनी बाबू श्री श्री माँ के चरणों पर गिर कर रोने लगे। इसके बाद महाप्रभु के मन्दिर में जाकर सोने का गौरांग देखा। चतुर्भुज गौरांग मन्दिर में जाकर श्रीकृष्ण लीला सम्बन्धित विभिन्न मूर्त्तियाँ देखने में आयीं। माँ घूम–घूमकर सारी मूर्तियाँ दिखाती रहीं। मन्दिर से बाहर निकलते ही माँ को गुनगुनाते सुना –

"हरिर नामेर सारि गेये परपारे जाय।"

आगे श्रीवासअंगन होकर हम लोग धर्मशाले में वापस आ गये।

श्री गौरांगदेव की मूर्ति के दर्शन कर जब हम बाजार से गुजर रहे थे तब अचानक एक बरतन की दुकान में प्रवेश कर माँ ने अचानक दो गगरे उठा लिये। उनमें से एक गगरा विमला माँ को देती हुई बोली – "चलो, हम दोनों दोनों गगरे को कमर पर रख लें।"

दुकानदार माँ का यह व्यवहार देखकर हँसने लगा। अखण्डानन्दजी ने जल्दी से दुकानदार से कहा – "इस कलशों की कीमत के बारे में चिन्ता न करें। हम दे देंगे।"

माँ और विमला माँ दोनों कलशों को कमर पर रखकर आगे बढ़ गयीं। तमाशा देखने की गरज से हम लोग माँ के पास–पास चलने लगे। मार्ग में दो संन्यासियों को देखकर माँ ने दोनों कलश उन लोगों को दे दिये। इनमें से एक हम लोगों की धर्मशाले में बराबर आता

रहा। दूसरा कलश लेने से अस्वीकृत हुआ तो उन्हें जबरन मजबूर करके दिया गया।

माँ ने शायद खुकुनी दीदी से कहा था – "उन लोगों ने प्रश्न नहीं किया कि ये कलश लेकर वे क्या करेंगे। अगर वे इस प्रकार का प्रश्न करते तो मैं उनसे कहती कि ये कलश जल से पूर्ण होने पर उससे मै पानी पिऊँगी।"

दरोगा के घर चोरी

दोनों कलश संन्यासियों को देने के बाद माँ पुनः चलने लगीं। चलते–चलते थाने में आ गयीं। थाने में एक बृहत् वट वृक्ष था। उसके नीचे चौतरा पक्का बना हुआ था। माँ पक्के चौतरे पर बैठीं। हम लोग चारों ओर खड़े हो गये। सभी सोचने लगे कि आखिर माँ यहां क्यों आयी हैं?

अन्त में शची बाबू ने पूछा–"माँ, तुम थाने पर क्यों आयी हो?"

माँ ने कहा – "थाना के जो इंचार्ज हैं, उनका मन आज सबेरे पाँच मिनिट के लिए चोरी चला गया था, इसीलिए वे मुझे थाने पर पकड़ लाये हैं।"

इस बात का अर्थ हम समझ नहीं सके। तभी थाने के दरोगा बाबू ने आकर माँ को प्रणाम किया। उनकी जबानी सुना कि माँ जिस दिन ललिता सखी के यहाँ गयी थीं, उस दिन वहाँ दरोगा बाबू उपस्थित थे। उन्होंने वहाँ सुना था कि ललिता सखी माँ से रूठकर अपने यहाँ बुलाने में समर्थ हुए थे। आज सवेरे वे बैठकर सोच रहे थे कि जिस प्रकार माँ ने ललिता सखी पर कृपा की है, उसी प्रकार उन पर भी कृपा करती तो बड़ा आनन्द आता। इस तरह की चिन्ता करने के बाद ही माँ पूरे दल के साथ यहाँ आ गयी। उक्त सज्जन की आकृति पर आनन्द की लहरें नृत्य कर रही थी। इसके साथ ही माँ की बातों का अर्थ समझ सका। दरोगा बाबू की सुकृति कम नहीं है। ये लोग धन्य हैं।

धर्मशाला वापस आकर खुकुनी दीदी से श्री श्री माँ की आसाम यात्रा का विवरण सुनने लगा। आसाम यात्रा के समय माँ के साथ दीदी भी थीं। शिलांग जाकर वहाँ के हेल्थ अफसर श्री युक्त हीरेन्द्र नाथ सरकार महाशय के निवास स्थान पर ठहरी थीं। हीरेन बाबू के साथ माँ का पूर्व परिचय नहीं था। लेकिन साधु–संन्यासियों की सेवा करने की उनकी आदत थी। आपकी पत्नी भी काफी भक्तिमती हैं। माँ को देखने के बाद हीरेन बाबू की पत्नी ने कहा था कि इन्हें मैंने दो–तीन दिन पूर्व अपने ठाकुर घर से निकलते देख चुकी हूँ। लेकिन उस समय इनकी महीन किनारे वाली साड़ी नहीं देख सकी थी। लाल रंग की साड़ी पहने हुए थीं।

दीदी ने कहा – दो–तीन दिन पहले माँ को अवश्य लाल साड़ी पहनायी गयी थी। इस भक्तिमती महिला पर कृपा करने के लिए ही शायद माँ शिलांग गयी थीं।''

शिलांग में एक घटना और हुई थी। उसका उल्लेख यहाँ कर रहा हूँ। माँ, खुकुनी दीदी, अखण्डानन्द स्वामी आदि जिस रास्ते से चल रहे थे, उसी मार्ग पर छोटी–छोटी कुछ लड़कियाँ खड़ी थीं। इनमें से एक ने आगे बढ़ कर माँ से कहा – अजी, तुम इधर आओ न, इधर आओ।''

उसके कथनानुसार माँ उसके पास गयीं। वह माँ को अपने घर ले गयी और माँ को कुछ खाने को दिया। उस लड़की का नाम श्रीमती शोभारानी घोष है। माँ उसे 'सझली माँ' कहती हैं और उसका नाम रखा है – नारायणी। यह कहानी मैं की जबानी सुन चुका हूँ। अब तक श्री श्री माँ की तीन माँ बन गयी हैं। प्रथम बड़ी माँ, आप हैं श्रीमती भ्रमर घोष एम.ए.; द्वितीय हैं संझली (तीसरी) माँ आप हैं श्रीमती शोभारानी घोष; तृतीय यानी छोटी माँ, आप हैं श्रीमती लोला दे। इन्हें माँ ने तारापीठी भेजा था। तीन महिलाएँ कायस्थ हैं। खुकुनी दीदी ने जब माँ से कहा तब माँ ने कहा – ''इससे अधिक मेरे भाग्य में और क्या मिलेगा ?''